

मेरा जीवन ही मेरा संदेश

महात्मा गांधी चित्रकथा



“माता साध्वी स्त्री थीं ऐसी मेरी स्मृति है। वे बहुत आस्तिक थीं। पूजा पाठ के बिना कभी भोजन नहीं करतीं कठिन से कठिन व्रतों को करतीं और उन्हें निर्विघ्न पूरा करतीं। संकल्पित व्रत बीमार पड़ें तो भी नहीं छोड़तीं।”

“पिता कुटुंबप्रेमी, सत्यप्रिय, शूर, उदार परन्तु क्रोधी थे। वे रिश्वत से दूर भागते थे इसलिए निष्पक्ष न्याय करते थे ऐसी हमारे कुटुंब में और बाहर बातें होती थीं।”

२ अक्टूबर, १८६९
पोरबंदर, पश्चिम गुजरात में करमचन्द गांधी और पुतलीबाई की चौथी सन्तान मोहनदास का जन्म।

१८७५
पोरबंदर की एक प्राथमिक शाला में एक वर्ष पढ़े।



१८७६

कस्तूरबा से सगाई। राजकोट के ब्रांच स्कूल में दाखिला। प्राथमिक शाला में नाटक 'श्रवण पितृभक्ति' पढ़ा। वहीं एक अन्य नाटक 'हरिश्चन्द्र' को देख, हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा से अत्यन्त प्रभावित।

१८८०

काठियावाड़ हाईस्कूल में दाखिला। सात साल तक इसी स्कूल में पढ़ाई, जो बाद में अल्फ्रेड हाईस्कूल नाम से जाना गया। स्कूल में शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर द्वारा निरीक्षण करते समय, शिक्षक के इशारा करने पर भी पास के छात्र की स्लेट से नकल नहीं की।



“मैं अतिशय शर्मिला लड़का था। पाठशाला में अपने काम से ही काम रखता। घंटी बजने के समय पहुँचना और पाठशाला के बंद होने पर घर भागता। 'भागता' शब्द इरादापूर्वक लिखा है क्योंकि मुझे किसी के साथ बात करना अच्छा नहीं लगता था। 'कोई मेरी मजाक उड़ायेगा तो?' इसका मुझे डर रहता।”

“मैं मानता था कि मास्टर तो हम एक दूसरे को देखकर नकल नहीं करें यह देखता है। सब लड़कों के पाँचों शब्द सही निकले और मैं अकेला बुद्ध प्रमाणित हुआ। मास्टर ने बाद में मुझे मेरी 'मूर्खता' समझाई; परन्तु मेरे मन पर उस समझाने का कोई असर नहीं हुआ। मुझे दूसरे लड़कों से नकल करना कभी नहीं आया।”



Rashtree 11/11/87

To
The dear friends of the Rasthree Society

I authorize Mr. Karamchand Karamchand as
student in good standing to receive my
government scholarship of Belcher.

I am
Yr. most obdt. pupil
Mohandas Karamchand Gandhi

१८८३

कस्तूरबाई से १३ वर्ष की उम्र में विवाह। मित्रों के असर में छुपकर मांस खाना शुरू किया, क्योंकि उनके परिवार के वैष्णव धर्म में मांसाहार निषेध था। पर माता-पिता से झूठ न बोलना पड़े, इस लिए मांस खाना बंद किया।

१८८५

कर्ज चुकाने के लिए भाई के बाजूबंद से सोने के टुकड़े की चोरी। अपने किए से शर्मिन्दा हो पिता को अपनी चोरी के बारे में बताया। 'उस दिन से, सच बोलना मेरा व्रत और स्वभाव हो गया।'

१८८६

पिता का देहावसान।

१८८७

मैट्रिक परीक्षा पास कर, भावनगर के शामलदास कालेज में प्रवेश। मित्रों ने इंग्लैण्ड में कानून पढ़ने की सलाह दी।

“माँ को तो कुछ समझ में नहीं आया ... कोई कहता कि विलायत में युवक बिगड़ जाते हैं, वे माँसाहारी हो जाते हैं, कोई कहता कि वहाँ शराब के बिना नहीं चलता माता ने यह सब मुझे सुना दिया। मैंने कहा, क्या तू मुझ पर विश्वास नहीं रखेगी? मैं तुझसे विश्वासघात नहीं करूँगा। मैं सौगंध खाकर कहता हूँ कि इन तीनों चीजों से बचूँगा। मैंने माँस, मदिरा और स्त्रीसंग से दूर रहने की प्रतिज्ञा ली। माताने आज्ञा दे दी।”





Pass Certificates.			231
Michaelmas. 1890—continued.			
Thompson, Sidney Arthur	-	-	Inner Temple
Thomson, Harry Crauford	-	-	Middle Temple
Torr, William George	-	-	Inner Temple
Tucker, Daniel Thomas	-	-	Gray's Inn
Turner, Richard Whitbourn	-	-	Middle Temple
Ward, Henry Walter	-	-	" "
Whitlock, Hubert Bayley Drysdale	-	-	" "
Yeo, Gerald	-	-	Inner Temple
1891			
Hilary.			
Adams, William Henry	-	-	Middle Temple
Atkin, Percy Harland	-	-	" "
Bailey, John Cann	-	-	Inner Temple
Bateman, Alexander Dingwall	-	-	" "
Birch, Francis Herrick	-	-	" "
Bond, John Wentworth Garneys	-	-	" "
Brodhurst, Bernard Edward Spencer	-	-	" "
Buch, Trimbuckray Tricomray Mamoonder	-	-	Middle Temple
Buller, Walter Leopold	-	-	Inner Temple
Burnett, William Freshfield	-	-	Lincoln's Inn
Charteris, Hon. Edward Evan	-	-	Inner Temple
Clegg, Thomas Bailey	-	-	Gray's Inn
Connolly, Paul	-	-	Inner Temple
Cutter, Thomas	-	-	Gray's Inn
De Vitat, Denis Frederick Denis	-	-	Inner Temple
Dove, Francis Thomas	-	-	Lincoln's Inn
Dove, Popyat Williams	-	-	Inner Temple
Evans, William Herbert	-	-	Middle Temple
Finner, James Alexander	-	-	Inner Temple
Gardner, Arthur Lewis Roger	-	-	" "
Gandhi, Mohandas Karamchand	-	-	Lincoln's Inn
Gates, Frank Campbell	-	-	Inner Temple
Glover, Arnold	-	-	" "
Gregg, Thomas	-	-	Gray's Inn
Hardy, Harold	-	-	Middle Temple
Henderson, James Stude	-	-	" "

४ सितम्बर, १८८८

बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैण्ड रवाना। परिवार राजकोट में ही रहा।

नवम्बर, १८८८

‘इनर टेम्पल’ में प्रवेश।

जून, १८९०

‘गीता’ पढ़ी, जिसका गहरा प्रभाव हुआ, और ‘गीता’ उनके दैनिक पठन का ग्रंथ बन गई।

सितम्बर, १८९०

लंदन शाकाहारी सोसायटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्य। शाकाहार पर दस आलेखों की एक श्रृंखला लिखी।

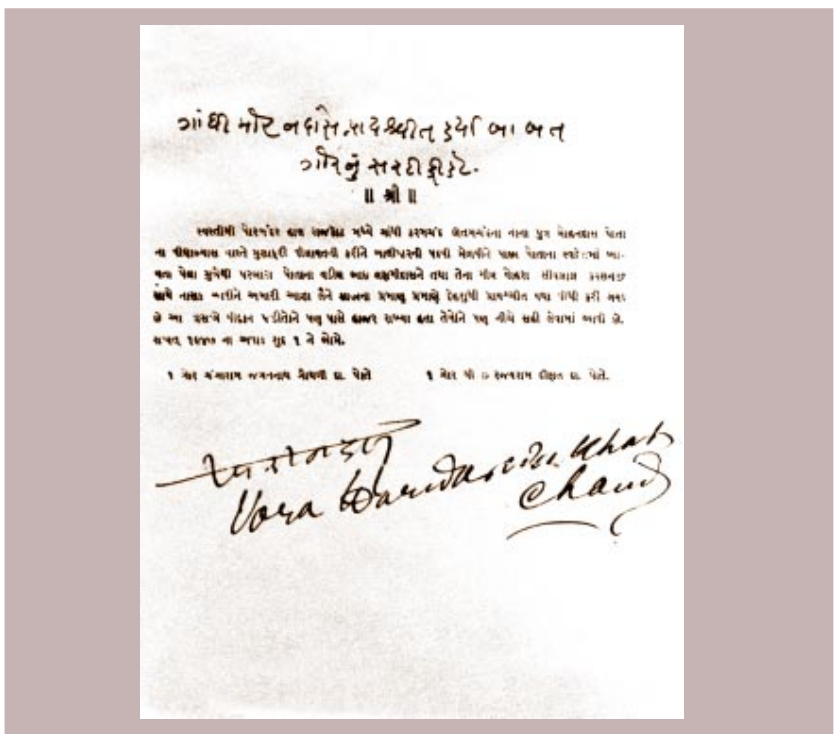
जून, १८९१

बार से आमंत्रण। हाईकोर्ट में नामांकन।



“अठारह वर्ष की उम्र में मैं विलायत गया..... सब कुछ अपरिचित-अनोखे लोग, अनोखी जीवन शैली, घर भी अनोखे। घर में रहने की रीति भात भी वैसी ही। क्या बोलने और क्या कहने से उनके रीत-रिवाजों के नियम भंग होंगे इस बारे में भी मैं बिल्कुल अनजान था। साथ में खाने-पीने का परहेज, और जो खाया जा सके वह खुराक सूखी और रस हीन। इससे मेरी स्थिति सरौते के बीच की सुपारी जैसी थी। विलायत अच्छी नहीं लगती और वापस देश जा नहीं सकता था। विलायत आ गया तो तीन वर्ष पूरे करने ही थे। परीक्षाएँ पास कर के १८९१ की दसवीं जून को मैं बैरिस्टर कहलाया, ग्यारहवीं को इंग्लैंड की हाईकोर्ट में ढाई शिलिंग देकर अपना नाम दर्ज कराया, बारहवीं जून को हिंदुस्तान की ओर वापस लौटा।”





“मैंने वकालात करते हुए एक आदत भी डाली थी कि अपना अज्ञान न तो मैं मुवक्किलों से छुपाता, न वकीलों के सामने। जिन मामलों में मुझे मालूम न होता, उन्हें अपने मुवक्किलों को दूसरे वकील के पास जाने के लिए कहता अथवा मुझे रखते तो अधिक अनुभवी वकील की सलाह लेकर काम करने के लिए कहता। इस स्पष्टवादिता के कारण मैं मुवक्किलों के अटूट प्रेम और विश्वासको प्राप्त कर सका था। इस विश्वास और प्रेम का पूरा लाभ मुझे सार्वजनिक कार्य में मिला।”

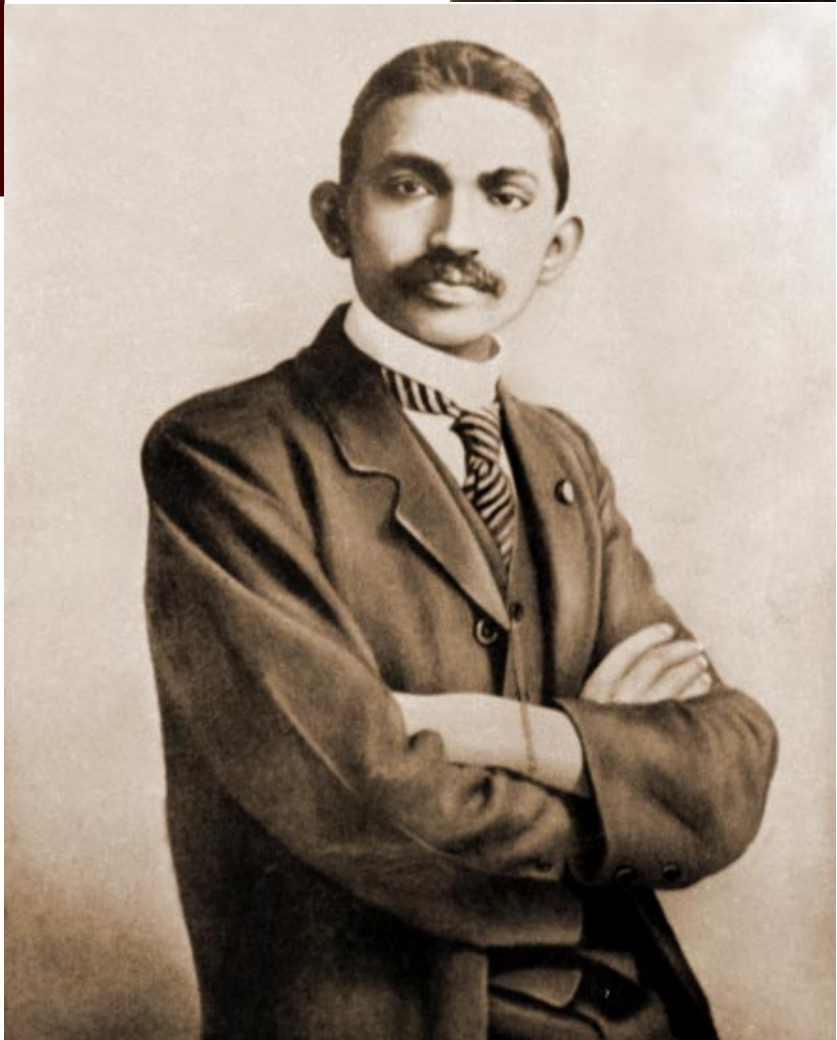
5 जुलाई, 1891
लंदन से बम्बई पहुंचे। माता की मृत्यु का समाचार मिला।

जुलाई, 1891
राजचन्द्रभाई से परिचय हुआ, और उनका गहरा प्रभाव।

मई, 1892
बम्बई हाईकोर्ट में वकालात करने आए। पहला मुकदमा करते नहीं बना, और फिर कोर्ट नहीं गए। छः महीने बाद राजकोट लौटे, अर्जी-दावे लिखने का काम करने लगे।

1893
दक्षिण अफ्रीका की एक व्यावसायिक फर्म दादा अब्दुला एंड कंपनी में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार किया।





जून, १८९३

दक्षिण अफ्रीका पहुंचे। रंगभेद का पहला व्यक्तिगत अनुभव।

अप्रैल, १८९४

आपसी समझौते और पंच फैसले से दादा अब्दुला का मुकदमा सुलझाया।

अगस्त, १८९४

रंगभेद के विरुद्ध नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना।

सितम्बर, १८९४

नेटाल सर्वोच्च न्यायालय में प्रविष्टि।

जुलाई, १८९६

छः महीने के लिए भारत लौटे। तिलक, गोखले और अन्य नेताओं से मुलाकात। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की दुर्दशा के बारे में 'हरी पुस्तिका' प्रकाशित की।

जनवरी, १८९७

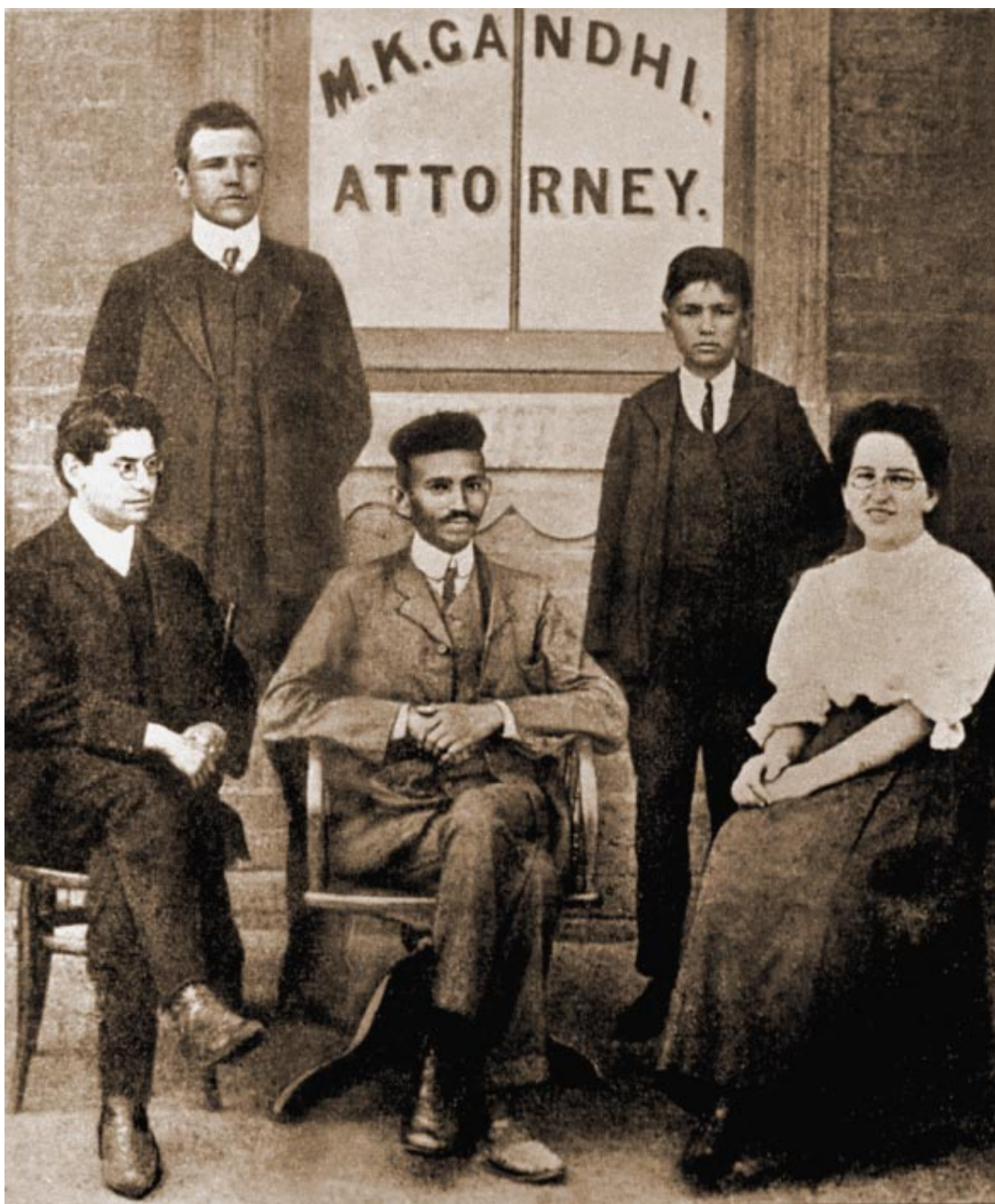
डरबन उतरने पर भीड़ द्वारा हमला।

१८९९

बोअर युद्ध के दौरान एम्बुलंस टोली का गठन।

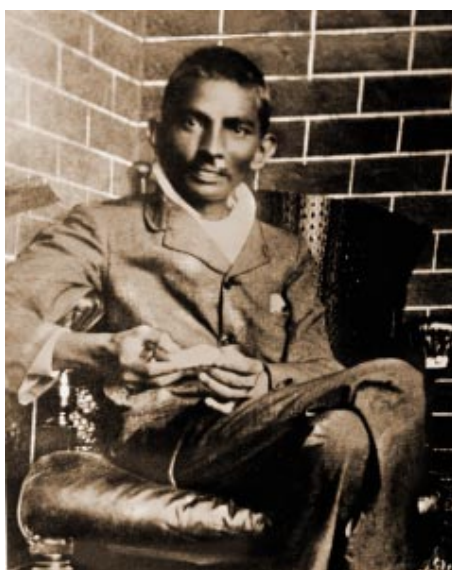
१९०१

भारत के लिए प्रस्थान, जरूरत होने पर एक वर्ष में वापस लौटने का वादा।



“प्रिटोरिया में जो एक वर्ष बीता वह मेरे जीवन में अमूल्य था। मुझे मेरी सार्वजनिक कार्य शक्ति का कुछ माप यहाँ मिला, उसके बारे में सीखना यहाँ मिला। धार्मिक भावना अपने आप तीव्र होने लगी और सही वकालात तो यहीं सीखी ऐसा कहा जा सकता है।”

“मैंने देखा कि वकील का कर्तव्य दोनों पक्षों के बीच की दरार को मिटाना है। इस शिक्षा ने मेरे मन में ऐसी जड़ जमायी की वकालात का मुख्य समय अपनी ऑफिस में बैठे बैठे सैकड़ों केसों का समाधान कराने में ही गया। मैंने इसमें कुछ खोया नहीं, धन भी नहीं खोया, आत्मा तो खोई ही नहीं।”





दिसम्बर
दक्षिण अफ्रीका वापसी।

फरवरी, १९०३
जोहानिसबर्ग में बसने का निर्णय। ट्रांसवाल सुप्रीम कोर्ट में नामांकन।

४ जून, १९०३
'इंडियन ओपिनियन' का प्रकाशन शुरू।

अक्टूबर, १९०४
डरबन जाते हुए रस्किन की 'अनटू धिस लास्ट' पढ़ी।



नवम्बर, १९०४
फिनिक्स वसाहट की स्थापना।

जून, १९०६
जुलु विद्रोह के दौरान, भारतीय एम्बुलेंस स्ट्रेचर बेअरर टोली का नेतृत्व।

जुलाई, १९०६
जीवन भर विचार, वाणी और आचार में ब्रह्मचर्य पालन का प्रण लिया।

१९०७
एशियन रजिस्ट्रेशन बिल के विरोध में प्रदर्शनों का नेतृत्व और संगठन। यह संघर्ष 'सत्याग्रह' कहलाया।

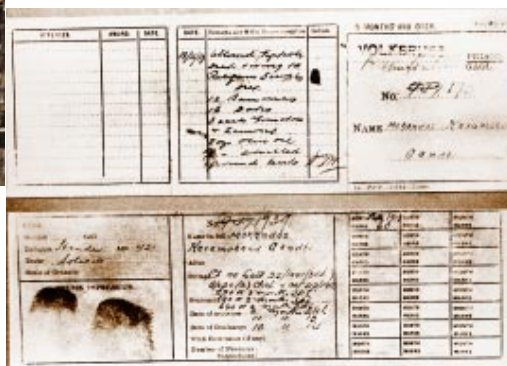
६ अक्टूबर, १९०८
ट्रांसवाल में बिना पंजीकरण पत्र के प्रवेश करने पर वॉकस्रस्ट में गिरफ्तार।

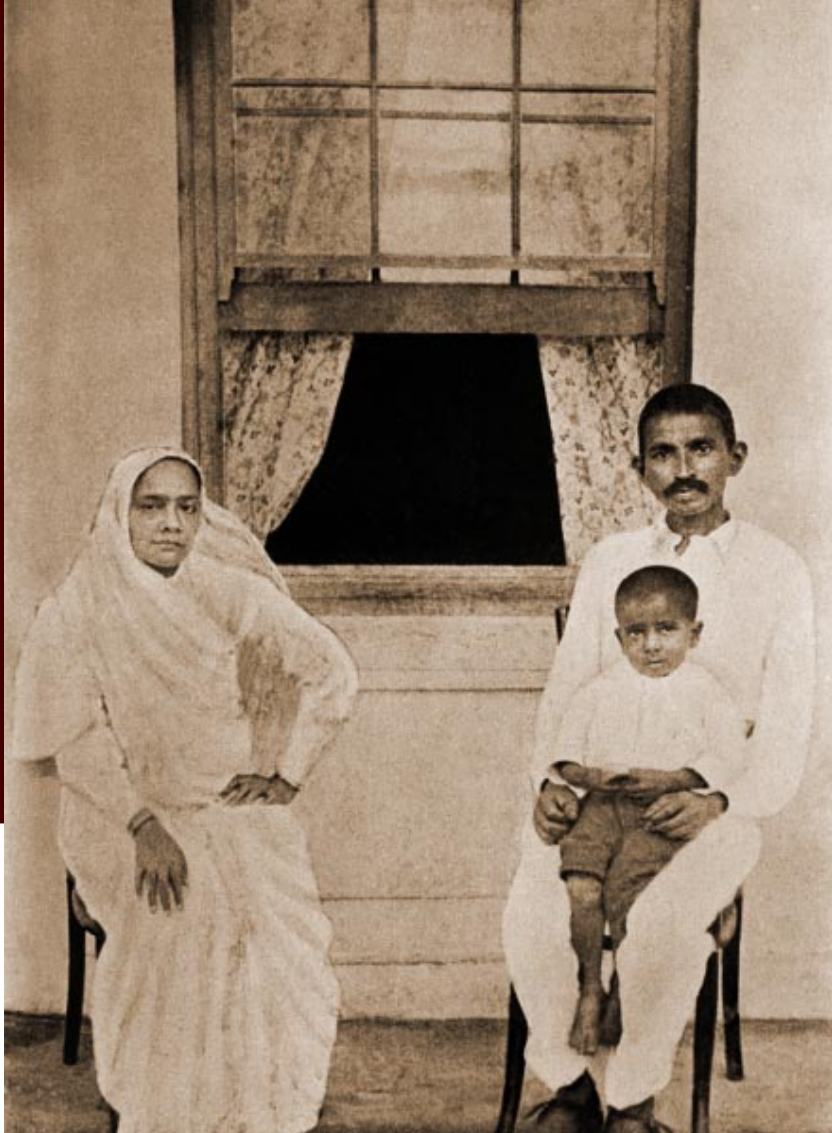


“इस तरह मैंने हिन्दुस्तानियोंकी दुर्दशाका ज्ञान पढ़कर, सुनकर और अनुभव करके प्राप्त किया। मैंने देखा कि स्वाभिमानकी रक्षा चाहनेवाले हिन्दुस्तानियों के लिए दक्षिण अफ्रीका रहने लायक देश नहीं है। यह स्थिति किस तरह बदली जा सकती है, इसके विचारमें मेरा मन अधिकाधिक व्यस्त रहने लगा।”

“दूसरोंको अपमानित करके लोग अपनेको सम्मानित कैसे समझ सकते हैं, इस पहली को मैं आज तक हल नहीं कर सका हूँ।”

“मैं हिदुस्तानी समाजकी सेवामें ओत-प्रोत हो गया, उसका कारण आत्मदर्शनकी मेरी अभिलाषा थी। ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी, यह मानकर मैंने सेवा-धर्म स्वीकार किया था। मैं हिन्दुस्तानी की सेवा करता था, क्योंकि वह सेवा मुझे अनायास प्राप्त हुई थी। मुझे उसमें रुचि थी। मुझे उसे खोजने नहीं जाना पड़ा था। मैं तो यात्रा करने, काठियावाड़ के षड्यंत्रोंसे बचने और आजीविका खोजने के लिए दक्षिण अफ्रीका गया था। परन्तु अपने को पाया ईश्वर की खोजमें - आत्मदर्शनके प्रयत्न में।”





१० जनवरी, १९०९

कस्तूरबा गंभीर रूप से बीमार। शल्य चिकित्सा करनी पड़ी।

१३-२२ नवम्बर, १९०९

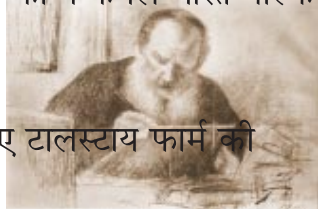
‘एस. एस. किल्डोना कॉसल’ से यात्रा के दौरान गुजराती में ‘हिन्द स्वराज’ लिखी।

मई, १९१०

लियो टालस्टाय का पत्र – शांतिपूर्ण प्रतिरोध को न केवल भारत बल्कि पूरी मानवता के लिए महत्व का बताया।

जून, १९१०

सत्याग्रहियों और उनके परिवारजन के लिए टालस्टाय फार्म की स्थापना।



अक्टूबर, १९१२

भारतीयों की स्थिति का आकलन करने गोपालकृष्ण गोखले का दक्षिण अफ्रीका आगमन।

१९ अप्रैल, १९१३

कस्तूरबा का संघर्ष में भाग लेने और गिरफ्तारी देने का निर्णय।

२५ सितम्बर, १९१३

यूरोपियों के लिए आरक्षित डब्बे से कंडक्टर के आदेश के बावजूद, उतरने से इंकार।

६ नवम्बर, १९१३

२०३७ पुरुष, १२७ महिलाएं और ५७ बच्चों के साथ ‘ग्रेट मार्च’ का चार्ल्सटाउन से नेतृत्व। पामफोर्ट में गिरफ्तारी।

२६ जून, १९१४

‘इंडियन रिलीफ बिल’ के पास होने से ८ सालों के संघर्ष का अंत।

जुलाई, १९१४

डरबन टाउन हाल में विदाई समारोह। गांधीजी को ‘देशभक्त महात्मा’ कहकर संबोधित किया गया।

दिसम्बर, १९१४

कस्तूरबा के साथ भारत के लिए निकले।

“उसने मुझ में विलीन होना पसंद किया। परिणाम स्वरूप वह मेरा शुभतर अर्धांग बनी। वह बहुत ही आग्रही स्वभाव की थी। मैं बचपन में इसे सनकीपन मानता। परन्तु इस सत्याग्रही स्वभाव ने उसे, बिलकुल अनजाने में अहिंसक असहकार की कला और उसके पालन में, मेरी गुरु बना दिया।”

“अच्छी तरह चर्चा करने के बाद और परिपक्व विचार के बाद मैंने सन् १९०६ में (ब्रह्मचर्य का) व्रत लिया। व्रत का निश्चय लेने से पहले मैंने अपनी पत्नी से इसके बारे में चर्चा नहीं की थी। पर उसकी ओर से इसका विरोध नहीं हुआ।”

“हम असाधारण दंपति थे। हमारे संबंध पहले से ज्यादा दृढ़ हुए। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। हम दो अलग व्यक्ति नहीं रहे। मेरी इच्छा नहीं थी फिर भी उसने मुझमें विलीन होना पसंद किया।”



“जिस समयकी बात मैं लिख रहा हूँ उस समय मैं ऐसा मानता था कि सभ्य माने जानेके लिए हमारा बाहरी आचार-व्यवहार यथासंभव यूरोपियनोंसे मिलता-जुलता होना चाहिए। ऐसा करनेसे ही लोगों पर प्रभाव पड़ सकता है और बिना प्रभाव पड़े देशसेवा नहीं हो सकती। ... इस कारण पत्नीकी और बच्चोंकी वेशभूषा मैंने ही पसंद की। उतनी ही लाचारी और उससे भी अधिक अरुचिसे खानेमें उन्होंने छुरी-कांटेका उपयोग शुरू किया। बाद में जब सभ्यता के चिह्नों से मेरा मोह दूर हुआ, तब उन्होंने फिर से बूट-मोजे, छुरी-कांटे आदि का त्याग किया। ‘सभ्यता’ के इस दिखावटी पहनावे को उतार कर हम सबने आजाद और हलका महसूस किया।”





१९१५

पूरे भारत में हार्दिक स्वागत ।

२५ मई, १९१५

अहमदाबाद में कोचरब आश्रम की स्थापना ।

२६ जून, १९१५

ब्रिटिश साम्राज्य की सेवा के लिए 'कैसर-ए-हिन्द' पदक ।

६ फरवरी, १९१६

बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय के शिलान्यास समारोह में भाषण, जिसका व्यापक प्रभाव हुआ ।

७ जून, १९१६

विनोबा भावे से पहली मुलाकात, अहमदाबाद में ।

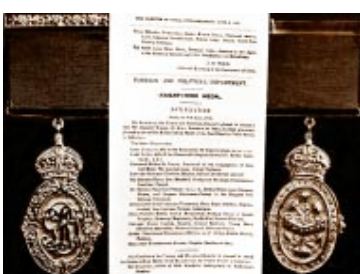
मार्च, १९१७

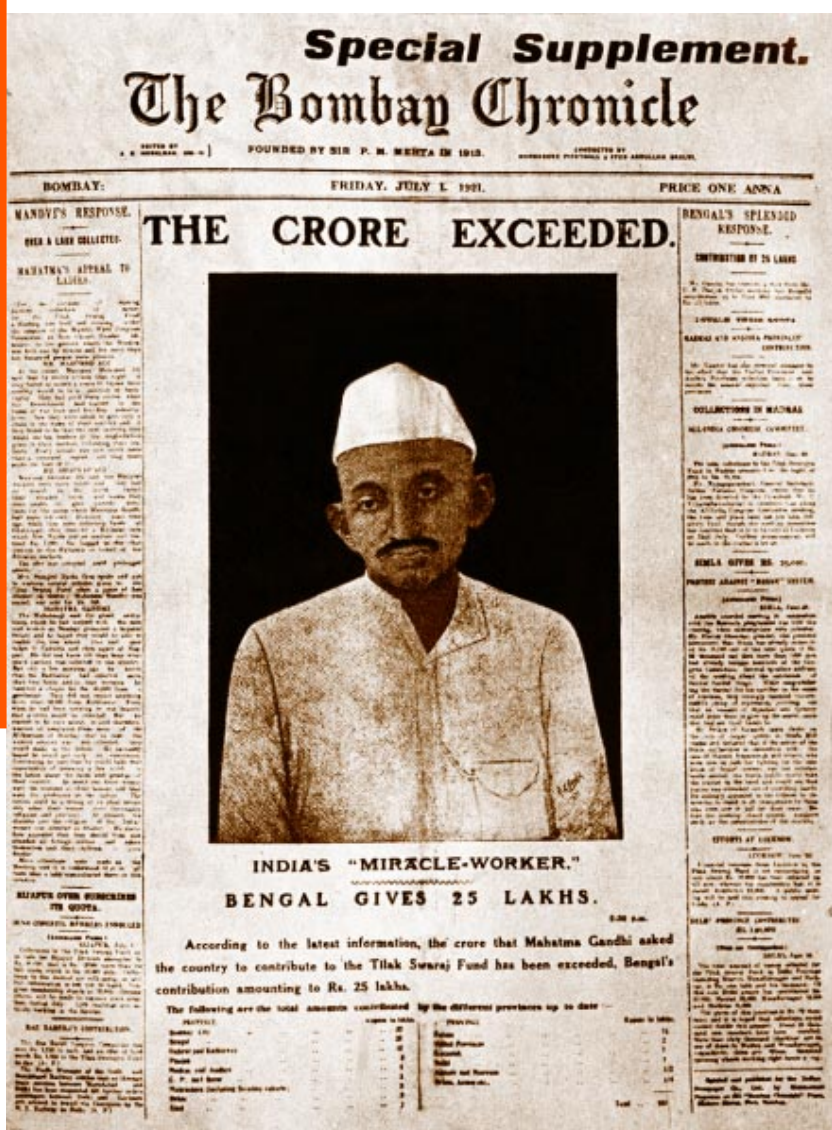
नील मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष के लिए चम्पारन, बिहार की यात्रा ।



“हमें तो सत्य की पूजा और सत्य की खोज करनी थी, उसी का आग्रह रखना था, और दक्षिण अफ्रीका में जिस पद्धति का मैंने उपयोग किया था उसकी पहचान भारतवर्ष में करानी थी और देखना था कि इसकी शक्ति कितनी व्यापक हो सकती है। इसलिए मैंने और साथियों ने सत्याग्रहाश्रम नाम पसंद किया। इसमें सेवा और उसकी पद्धति का भाव सहज रूप से आ जाता था।”

“जगत हित की अविरोधी ऐसी देश सेवा करने की शिक्षा लेना और ऐसी देश सेवा करने के लिए सतत प्रयत्न करना, यह इस आश्रम का उद्देश्य है।”





जनवरी - मार्च, १९१८

अहमदाबाद में मिल मजदूरों की हड़ताल।

अक्टूबर, १९१८

बीमारी से हालत अत्यंत गंभीर।

फरवरी, १९१९

‘रौलट एक्ट’ के विरोध में देशव्यापी सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत। साबरमती आश्रम की सभा में सत्याग्रह की शपथ।

७ अप्रैल, १९१९

बिना पंजीकरण के ‘सत्याग्रह’ का पहला अंक प्रकाशित।

१३ अप्रैल, १९१९

जालियांवाला बाग, अमृतसर में आमसभा में कत्लेआम। देशभर में विरोध और हड़ताल।

अप्रैल, १९१९

बम्बई में पुलिस की गोलीबारी के विरोध में ७२ घंटे का उपवास।

७ सितम्बर, १९१९

‘नवजीवन’ का संपादन।

८ अक्टूबर, १९१९

गांधीजी द्वारा संपादित ‘यंग इंडिया’ का प्रथम अंक।

३१ अगस्त, १९२०

जीवन भर खादी पहनने की प्रतिज्ञा।

३१ जुलाई, १९२१

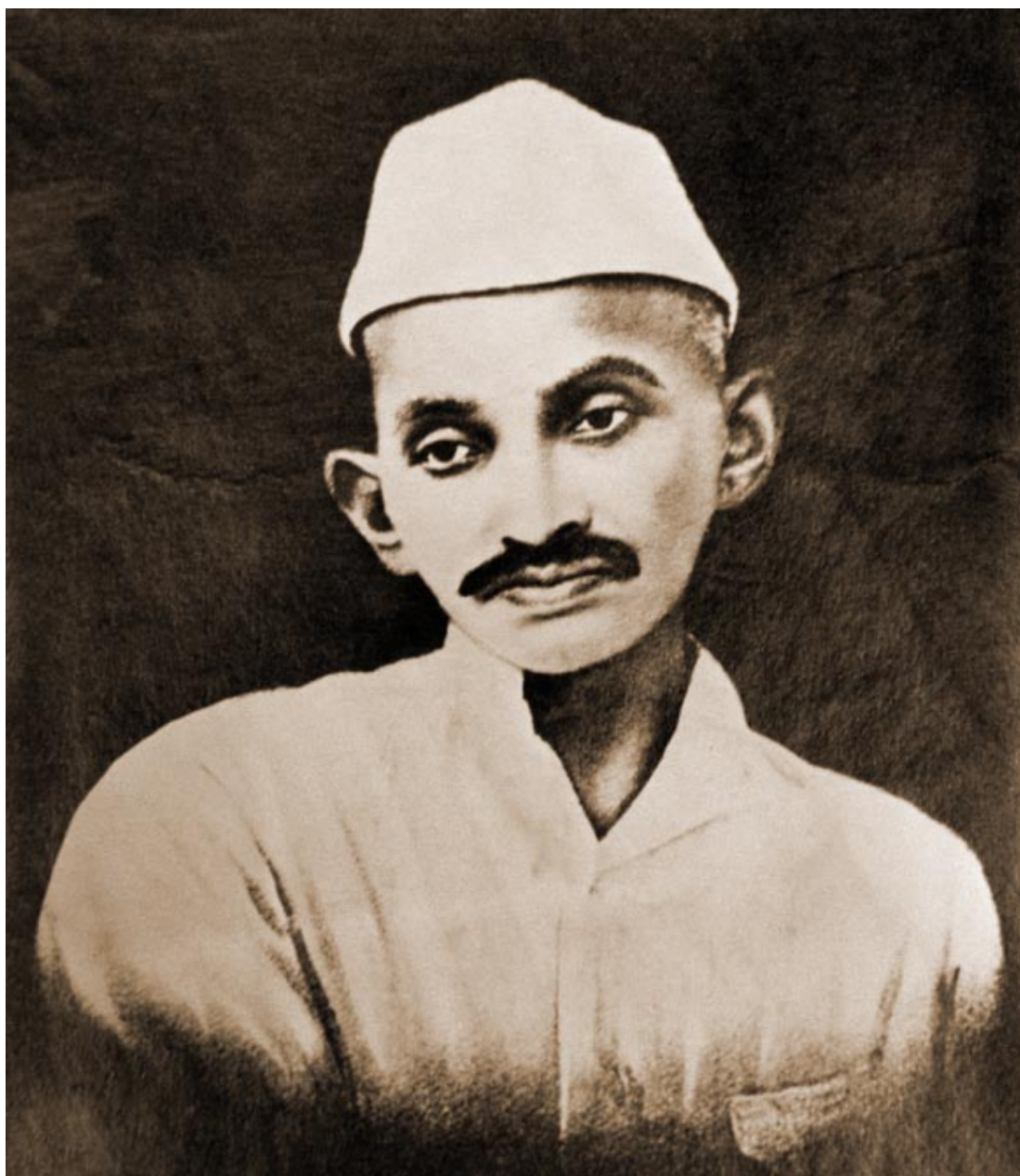
बम्बई में विदेशी कपड़ों की होली से स्वदेशी आंदोलन का आरंभ।

२२ सितम्बर, १९२१

पूरी पोशाक त्यागकर, केवल धोती पहनना शुरू किया।

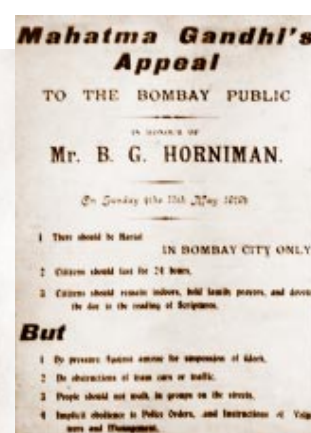
नवम्बर, १९२१

बम्बई में शांति और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए उपवास।



“लोग चाहे कितने ही सही हों परन्तु सरकार अपनी सनक के अनुसार निर्णय लेती है। ऐसी स्थिति में मेरी सलाह है कि सरकार हमारी माँगों को नहीं स्वीकारे तो हमें सरकार से कह देना चाहिए कि हम लगान नहीं भरने वाले और इसके लिए हमें जो सहन करना पड़े उसके लिए तैयार रहना चाहिए। सत्य के लिए आग्रहपूर्वक ना कहना इसी का नाम सत्याग्रह है।”

“सत्याग्रह एक सर्वधारी तलवार है। उसे जैसे चलाना चाहो चलाया जा सकता है। चलाने वाले और जिस पर चलाई गई हो वे दोनों सुखी होते हैं। वह खून नहीं बहाती परन्तु परिणाम उससे भी बड़ा ला सकती है। उसे जंग नहीं लग सकती और न कोई उसे चुरा कर ले जा सकता है। कानून भंग सच्चे दिल से, आदरपूर्वक और निग्रहशील हो तो उसे सविनय कहा जा सकता है। वह अच्छी तरह समझे गए सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिए, उसमें स्वच्छंदता का स्थान नहीं होता। और सबसे महत्वपूर्ण, उसके पीछे कोई बुरी भावना या द्वेष नहीं होना चाहिए।”





८ फरवरी, १९२२

चौरी चौरा में हुई हिंसा से सविनय अवज्ञा बंद करने का निर्णय।

१२ फरवरी, १९२२

चौरी चौरा की घटनाओं के प्रायश्चित के लिए पांच दिन का उपवास।

१० मार्च, १९२२

गिरफ्तार कर साबरमती जेल ले जाए गए। २२ मार्च को यरवडा जेल में स्थानांतरण।

१२ जनवरी, १९२४

जेल में अपेंडिसाइटिस का आपरेशन। ५ फरवरी को रिहा।

सितम्बर, १९२४

कोहट में हिन्दू-मुस्लिम दंगों के प्रायश्चित और प्रार्थना के लिए २१ दिन का उपवास।

२८ दिसम्बर, १९२४

बेलगाम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ३९वें अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण।

२४ नवम्बर, १९२५

आश्रम में नैतिक पतन के प्रायश्चित के लिए सात दिन का उपवास।

२२ मई, १९२८

एक आश्रम वासी के नैतिक पतन के प्रायश्चित के लिए तीन दिन का उपवास।

३१ दिसम्बर, १९२९

लाहौर कांग्रेस के खुले सत्र में गांधीजी का 'पूर्ण स्वराज्य' प्रस्ताव स्वीकार।

“एक चुस्त राज्यभक्त से आज मैं कट्टर राज्यद्रोही और असहकारी क्यों बना उसका स्पष्टीकरण देने के लिए वचनबद्ध हूँ।

“अफसोस के साथ मैं इस निर्णय पर आया हूँ कि ब्रिटिश हुकूमत ने राजकीय और आर्थिक दोनों दृष्टि से हिन्द को इतना लाचार बना दिया है, जितना वह पहले कभी नहीं था।

“सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि अंग्रेज और देश का शासन चलाने के कार्य में लगे उनके हिन्दुस्तानी साथी, वे किसी गुनाह के कार्य में शरीक है यह नहीं समझ पा रहे।

“किसी नौकरशाह या अधिकारी के साथ मेरा निजी या व्यक्तिगत कोई द्वेष नहीं है। परन्तु जिस सरकार ने पहले की किसी भी राज-सत्ता से कुल मिलाकर हिन्दुस्तान का अहित ही अधिक किया हो, उससे अप्रति होना, इसे मैं सद्गुण ही मानता हूँ।

“जिस अस्वाभाविक स्थिति में अभी इंग्लैंड तथा हिन्दुस्तान है, उससे निकलने के लिए मैंने असहकार का मार्ग बताया है। इससे मैंने दोनों की सेवा ही की है। यदि आपको निश्चित रूप से लगता है कि मेरा कार्य सार्वजनिक हित को नुकसान पहुँचाने वाला है तो आप मुझे कड़ी से कड़ी सजा करें।”





१२ मार्च, १९३०

दांडी कूच की शुरुआत। स्वतंत्रता नहीं मिलने तक आश्रम वापस नहीं आने का प्रण।

६ अप्रैल, १९३०

दांडी के समुद्र तट पर प्राकृतिक नमक को हाथ से उठाकर, 'नमक कानून' तोड़ा।

५ मई, १९३०

कराडी में सुबह-सुबह ही गिरफ्तारी। यरवडा जेल ले जाए गए।

१ जनवरी, १९३१

यरवडा जेल से रिहा।

“मैं एक अनुभवी अपराधी हूँ। १९२२ के मार्च महिने में मुझे कैद हुई। कैद की यह मेरे जीवन की पहली घटना नहीं है। मुझे दक्षिण अफ्रीका में तीन बार अपराधी प्रमाणित किया जा चुका है। और दक्षिण अफ्रीका की सरकार उस समय मुझे एक खतरनाक कैदी मानती थी। इसलिए मुझे एक जेल से दूसरी जेल में भेजा जाता था। इसलिए जेल जीवन का मुझे बहुत अनुभव मिला। हिन्दुस्तान में जेल में जाने से पहले मैं छह जेलों का अनुभव प्राप्त कर चुका था और इतने ही सुपरिन्टेन्डन्टों और उतने ही जेलरों के संपर्क में आ चुका था। इसलिए जब दसवीं मार्च की उस सुहावनी रात को भाई बेंकर के साथ साबरमती जेल में ले जाया गया तो कोई नवीन या आकस्मिक अनुभव होने पर मनुष्य को जिस तरह विस्मय होता है वैसा विस्मय कारक अनुभव मुझे नहीं हुआ। मुझे तो शायद ऐसा लगा कि प्रेम की और जीतें प्राप्त करने के लिए एक घर बदलकर मैं दूसरे घर जा रहा हूँ।”





२३ फरवरी, १९३१

कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने वाइसराय से वार्ता के लिए गांधीजी को पूरे अधिकार दिए।

४ मार्च, १९३१

गांधी-इर्विन समझौते पर हस्ताक्षर।

२९ अगस्त, १९३१

गोल मेज परिषद में भाग लेने इंग्लैंड रवाना।

५ नवम्बर, १९३१

बकिंघम पैलेस के राजसी समारोह में अपनी सामान्य पोशाक में गए।

१ दिसम्बर, १९३१

गोल मेज परिषद की वार्ता असफल।

२८ दिसम्बर, १९३१

बम्बई वापसी।

“पूर्ण स्वराज्यकी मेरी कल्पना दूसरे देशोंसे कोई नाता न रखनेवाली स्वतंत्रता की नहीं, बल्कि स्वस्थ और गम्भीर किस्म की स्वतंत्रता की है। मेरा राष्ट्र प्रेम उग्र तो है, पर वह वर्जनशील नहीं हैं; उसमें किसी दूसरे राष्ट्र या व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने की भावना नहीं है।”

“उसका अर्थ विदेशी नियंत्रण से पूरी मुक्ति और पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता है। उसके दो दूसरे उद्देश्य भी हैं; एक छोर पर है नैतिक और सामाजिक उद्देश्य और दूसरे छोर पर इसी कक्षा का दूसरा उद्देश्य है धर्म। यहां धर्म शब्द का सर्वोच्च अर्थ अभीष्ट है। उसमें हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म आदि सबका समावेश होता है, लेकिन वह इन सबसे ऊंचा है। . . . इसे हम स्वराज्य का सम-चतुर्भुज कह सकते हैं; यदि उसका एक भी कोण विषम हुआ तो उसका रूप विकृत हो जायेगा।”





३ जनवरी, १९३२

वाइसराय को चेतावनी, 'हमारे पास संघर्ष फिर शुरू करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।'

४ जनवरी, १९३२

बम्बई में सुबह ३ बजे गिरफ्तार। यरवडा जेल ले जाए गए।

२० सितम्बर, १९३२

यरवडा जेल में आमरण उपवास प्रारंभ।

२६ सितम्बर, १९३२

पत्रव्यवहार की आजादी और हरिजन कार्य के लिए मुलाकातों की मांगें सरकार ने मानी। उपवास तोड़ा।

३-४ दिसम्बर, १९३२

गुरुवयूर मंदिर में हरिजनों के प्रवेश की मांग लेकर यरवडा जेल में उपवास।

८-२९ मई, १९३३

यरवडा जेल में उपवास।

१८-२४ अगस्त, १९३३

यरवडा जेल में उपवास के दौरान हालत गंभीर। सासून अस्पताल ले जाए गए।

२४ अगस्त, १९३३

जेल से रिहाई।



“मेरी राय में हिन्दू धर्म में दिखायी पड़नेवाला अस्पृश्यता का वर्तमान रूप ईश्वर और मनुष्य के खिलाफ किया गया भयंकर अपराध है और इसलिए वह एक ऐसा विष है जो धीरे-धीरे हिन्दू धर्मके प्राण को ही निःशेष किये दे रहा है। मेरी रायमें हिन्दू शास्त्रों में इस बुराई का कहीं कोई समर्थन नहीं है।”

“यदि हम भारत की आबादी के पांचवें हिस्से को स्थायी गुलामी की हालत में रखना चाहते हैं और उन्हें जान-बूझकर राष्ट्रीय संस्कृति के फलों से वंचित रखना चाहते हैं, तो स्वराज्य एक अर्थहीन शब्दमात्र होगा। आत्मशुद्धि के इस महान आन्दोलन में हम भगवान की मदद की आकांक्षा रखते हैं, लेकिन उसकी प्रजा के सबसे ज्यादा सुपात्र अंश को हम मानवता के अधिकारों से वंचित रखते हैं। यदि हम स्वयं मानवीय दया से शून्य हैं, तो उसके सिंहासन के निकट दूसरों की निष्ठुरता से मुक्ति पाने की याचना हम नहीं कर सकते।”



३० अक्टूबर, १९३४

वर्धा में वक्तव्य, 'अब मेरी रुचि केवल रचनात्मक कार्य में है।'

१४ दिसम्बर, १९३४

वर्धा में अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना।

२ जनवरी, १९३५

दिल्ली में हरिजन बस्ती की स्थापना। हरिजन सेवक संघ का नया संविधान स्वीकार।

१६ जून, १९३६

सेगांव में अपनी कुटिया में रहने लगे।

नवम्बर, १९३६

त्रावणकोर के शासक ने त्रावणकोर के सारे मंदिर सभी हिंदूओं के लिए खोले।

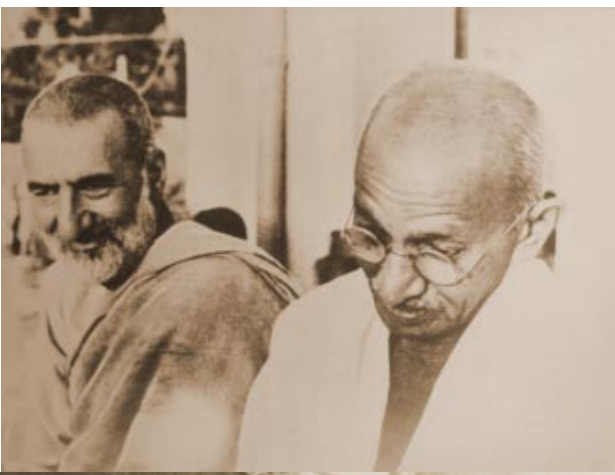
अखिल भारत गोसेवा संघ की स्थापना।

“मेरे विचार में खादी हिन्दुस्तानकी समस्त जनता की एकता की, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक है।”

“इसके सिवा, खादीवृत्ति का अर्थ है, जीवनके लिए जरूरी चीजों की उत्पत्ति और उनके बंटवारे का विकेन्द्रीकरण।”

“खादी के अभाव में उनकी कोई हस्ती नहीं, और उनके बिना खादी का गौरव या शोभा नहीं है। हाथ से पीसना, हाथ से कूटना, और पछोरना, साबुन बनाना, कागज बनाना, चमड़ा कमाना, तेल पेरना और इस तरहके सामाजिक जीवन के लिए जरूरी और महत्व के दूसरे धन्धों के बिना गांवों की आर्थिक रचना संपूर्ण नहीं हो सकती, यानी गांव स्वयंपूर्ण घटक नहीं बन सकते। कांग्रेसी आदमी इन सब धन्धों में दिलचस्पी लेगा, और अगर वह गांवका बाशिन्दा होगा या गांव में जाकर रहता होगा, तो इन धन्धों में नयी जान फूँकेगा और इन्हें नये रास्ते ले जायेगा। हर एक आदमी को, हर हिन्दुस्तानी को इसे अपना धर्म समझना चाहिये कि जब-जब और जहां-जहां मिले, वहां वह हमेशा गांवों की बनी चीजें ही बरते।”

“जब हम गांवों के लिए सहानुभूति से सोचने लगेंगे और गांवोंकी बनी चीजें हमें पसन्द आने लगेंगी, तो पश्चिम की नकल के रूपमें यंत्रों की बनी चीजें हमें नहीं जंचेंगी; और हम ऐसी राष्ट्रीय अभिरुचि का विकास करेंगे, जो गरीबी, भुखमरी और आलस्य या बेकारी से मुक्त नये हिन्दुस्तानके आदर्श के साथ मेल खाती होगी।”



१६ मार्च, १९३७

कांग्रेस कार्यकारिणी ने कांग्रेस बहुमत वाले प्रांतों में राज्यकाम संभालने की स्वीकृति दी, अगर राज्यपाल कार्य में हस्तक्षेप न करने का वचन दें।

२६ मार्च, १९३७

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में दीक्षान्त भाषण।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हरिपुरा कांग्रेस में अध्यक्ष चुने गए।

फरवरी, १९३८

सेगांव में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक।

मई, १९३८

खान अब्दुल गफ्फार खान के निमंत्रण पर उत्तर पश्चिम सीमांत क्षेत्र के दौरों में नवशेरा आगमन।

३० दिसम्बर, १९३८

मगनवाड़ी खादी ग्रामोद्योग संग्रहालय और उद्योग शाला का उद्घाटन।

३-७ मार्च, १९३९

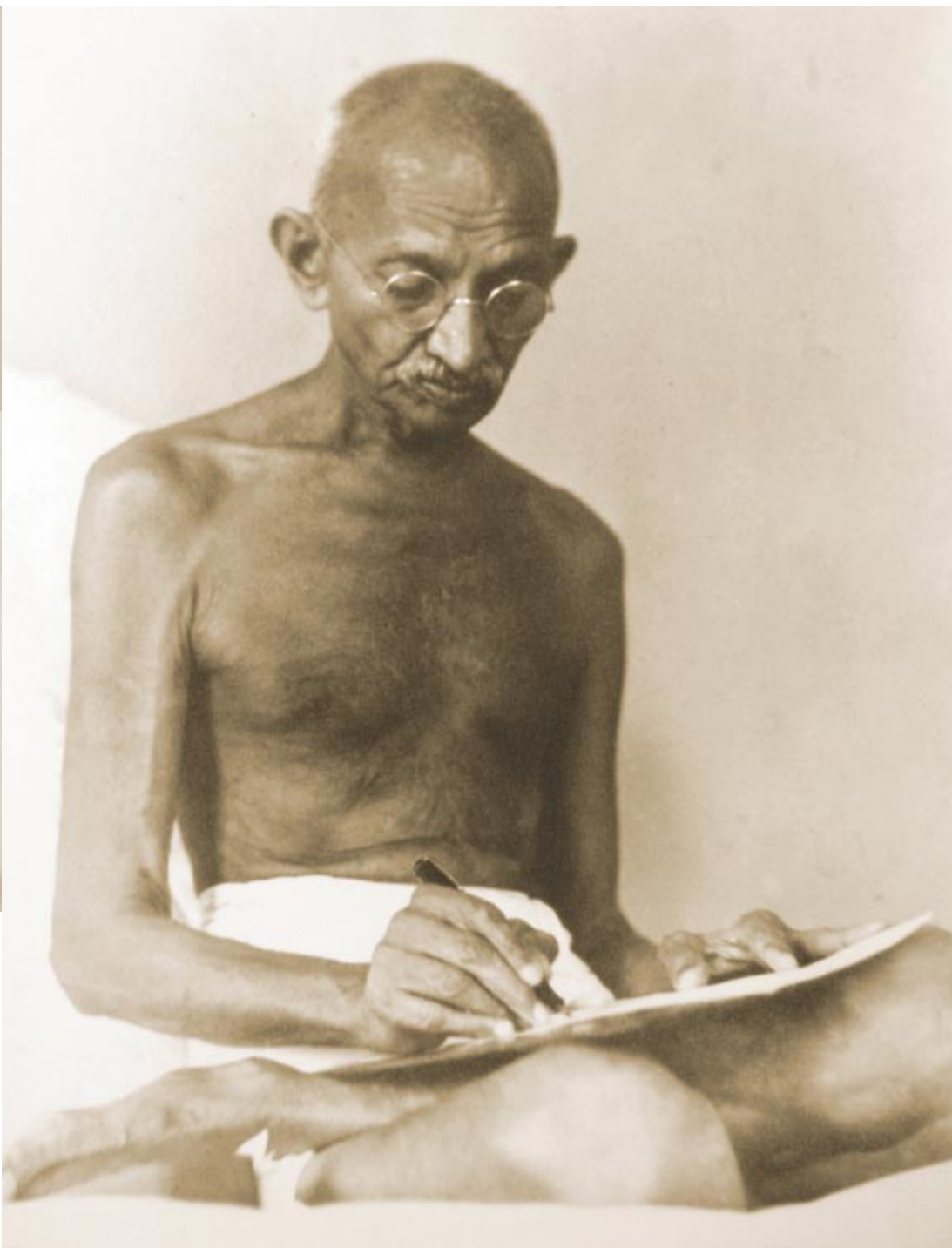
राजा द्वारा जनता को दिए वादों को न निभाने के विरोध में राजकोट में उपवास।

१८-१९ फरवरी, १९४०

शांतिनिकेतन यात्रा।

५ मार्च, १९४०

सेगांव का नाम सेवाग्राम हुआ।

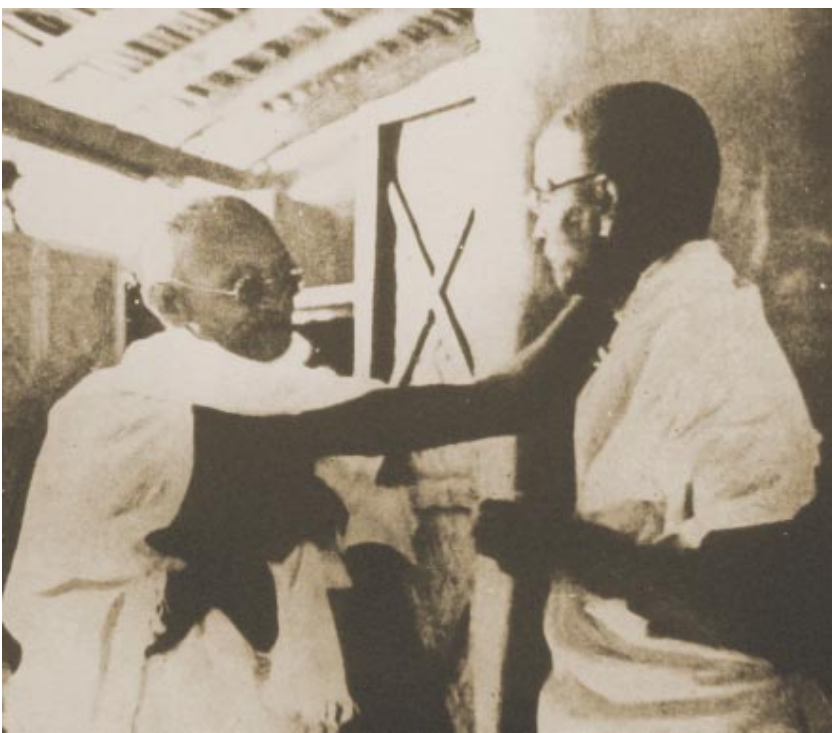


“अगर हमें एक राष्ट्र होने का अपना दावा सिद्ध करना है, तो हमारी अनेक बातें एकसी होनी चाहिये। भिन्न-भिन्न धर्म और सम्प्रदायों को एक सूत्रमें बांधनेवाली हमारी एक सामान्य संस्कृति है। हमारी त्रुटियां और बाधाएँ भी एकसी हैं। मैं यह बतानेकी कोशिश कर रहा हूँ कि हमारी पोशाक के लिए एक ही तरहका कपड़ा न केवल वांछनीय है, बल्कि आवश्यक भी है। हमें एक सर्वप्रचलित राष्ट्रभाषा की भी जरूरत है – देशी भाषाओंकी जगह पर नहीं परन्तु उनके साथ-साथ।”

“अंग्रेजी के ज्ञानके बिना ही भारतीय मस्तिष्कका उच्चसे उच्च विकास संभव होना चाहिये। हमारे लड़कों और लड़कियोंको यह सोचने का प्रोत्साहन देना कि अंग्रेजी जाने बिना उत्तम समाजमें प्रवेश करना असंभव है, भारतके पुरुष-समाज के और खास तौर पर नारी-समाजके प्रति हिंसा करना है। यह विचार इतना अपमानजनक है कि इसे सहन नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी के मोहसे छुटकारा पाना स्वराज्यके लिए एक जरूरी शर्त है।”



Do or die



१५ अक्टूबर, १९४०

विनोबा 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' की शुरुआत करेंगे इसकी घोषणा।

१३ जनवरी, १९४१

सेवाग्राम में वक्तव्य, “लड़ाई शुरू होने के बाद वापस आने का कोई सवाल ही नहीं, हर एक को अपना नेता स्वयं होना पड़ेगा।”

८ अगस्त, १९४२

आल इंडिया कांग्रेस कमिटी द्वारा बम्बई में भारत छोड़ो प्रस्ताव पास।

९ अगस्त, १९४२

गिरफ्तार कर आगा खान पेलेस ले जाए गए। सत्याग्रहियों की राष्ट्रव्यापी गिरफ्तारी।

“सत्याग्रह सीधी कार्रवाई के अत्यंत बलशाली उपायों में से एक है, इसलिए सत्याग्रही सत्याग्रह का आश्रय लेने से पहले और सब उपाय आजमा कर देख लेते हैं। इसके लिए वह सदा और निरन्तर सत्ताधारियों के पास जायेगा, लोकमत को प्रभावित और शिक्षित करेगा, जो उसकी सुनना चाहते हैं उन सबके सामने अपना मामला शान्ति और ठंडे दिमाग से रखेगा और जब ये सब उपाय वह आजमा चुकेगा तभी सत्याग्रह का आश्रय लेगा। परन्तु जब उसे अन्तर्नाद की प्रेरक पुकार सुनाई देती है और वह सत्याग्रह छोड़ देता है, तब वह अपना सब-कुछ दांव पर लगा देता है और पीछे कदम नहीं हटाता।”

“मैं चाहता हूँ कि आप समझ जाएं कि कांग्रेस क्या चाहती है। वह स्वतंत्रता माँगती है। फिर इसे आप किसी भी नाम से पहचानें... मेरा मार्ग किस दिशा में जाएगा, मुझे इसका पता नहीं है... शायद मुझे विपरीत दिशा में जाना पड़े.... मानव स्वभाव का गौरव ऐसा चाहता है कि हम जीवन में आने वाले संग्रामों का सामना करें।”





“बा को जेल से छूटने का कितना अधिक इंतजार था? परन्तु मैं जानता हूँ इससे उत्तम मृत्यु उसे नहीं मिलती। बा और महादेव दोनों ने स्वतंत्रता की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी है। दोनों अमर हो गए।”



१५ अगस्त, १९४२

जेल में महादेवभाई देसाई का देहावसान।

१० फरवरी, १९४३

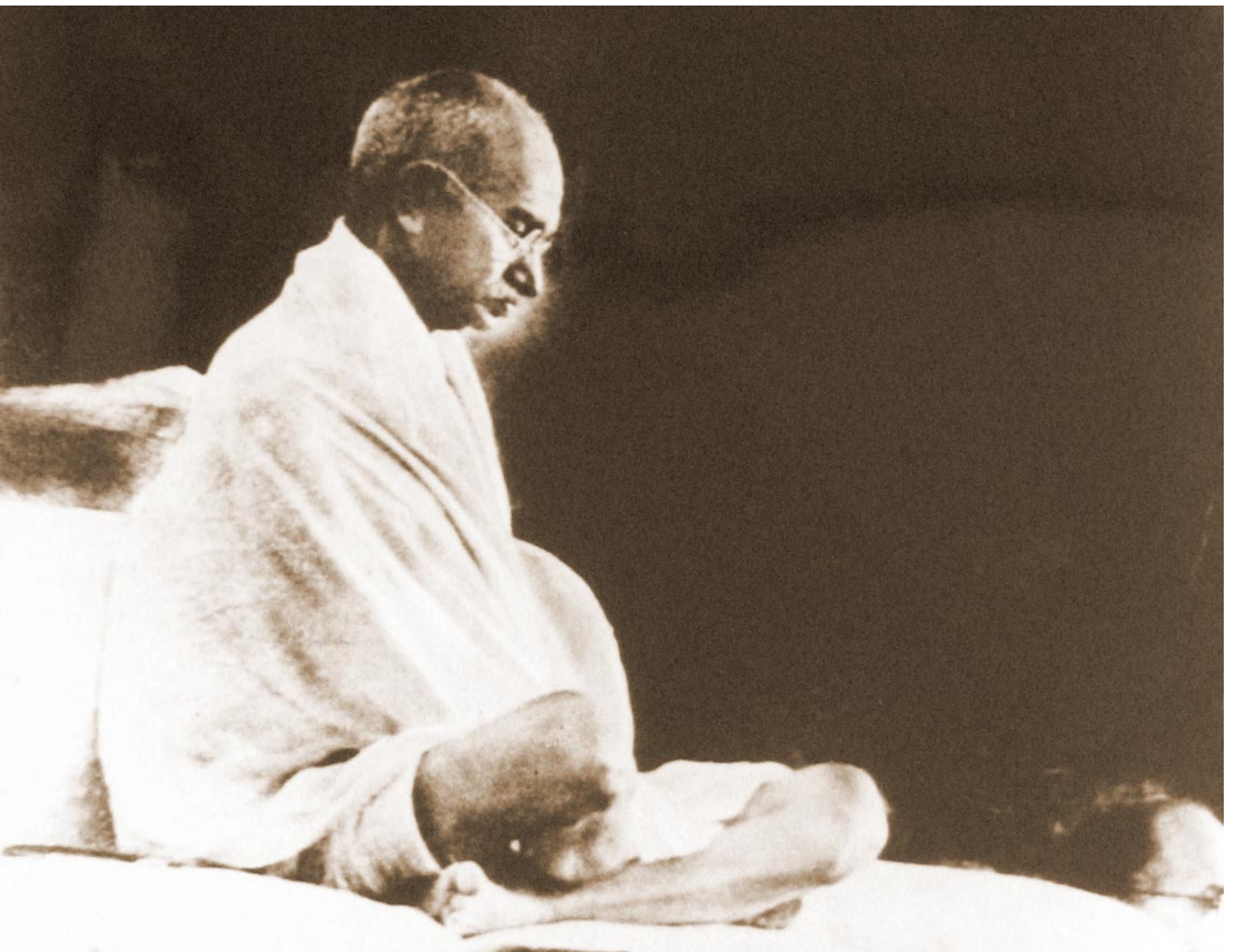
जेल में उपवास का प्रारंभ। वाइसराय को पत्र, ‘मेरा उपवास ब्लोकमेल नहीं है। यहां न्याय की कोई संभावना नहीं है, इसलिए मैं भगवान से संपर्क कर रहा हूँ।’

२२ फरवरी, १९४४

जेल में लम्बी बीमारी के बाद कस्तूरबा का निधन।

६ मई, १९४४

कारावास से रिहाई।



मई, १९४४

बम्बई में स्वास्थ्य लाभ। पंचगनी में कहा, “सही मायने में सत्याग्रह तो अभी शुरू भी नहीं हुआ है।”

२६ नवम्बर, १९४४

कस्तूरबा स्मारक न्यास की स्थापना।

अगस्त, १९४५

अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिराया गया। जापान का आत्मसमर्पण। गांधाजी की विनती- ‘हारे हुआं (जर्मनी और जापान) को अपमानित न किया जाए।’

“मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि भारत अपनी स्वतंत्रता अहिंसक उपायोंसे प्राप्त करे, तो फिर वह बड़ी स्थलसेना, उतनी ही बड़ी जलसेना और उससे भी बड़ी वायुसेना रखने की इच्छा नहीं करेगा। यदि आजादी की अपनी लड़ाई में अहिंसक विजय प्राप्त करने के लिए उसकी आत्म-चेतना को जितनी ऊंचाई तक उठना चाहिये उतनी ऊंचाई तक वह उठ सकी, तो दुनिया के माने हुए मूल्यों में परिवर्तन हो जायगा और लड़ाईयों के साज-सामान का अधिकांश निरर्थक सिद्ध हो जायगा। ऐसा भारत भले महज एक सपना हो, बच्चों की जैसी कल्पना हो। लेकिन मेरी रायमें अहिंसा के द्वारा भारत के स्वतंत्र होने का फलितार्थ तो बेशक यही होना चाहिये। ऐसी स्वतंत्रता, वह जब भी आयगी तब, . . . ब्रिटेन के साथ सज्जनोचित समझौते के जरिये आयगी। लेकिन तब जिस ब्रिटेनसे हमारा समझौता होगा वह दुनिया में सर्वश्रेष्ठ स्थान लेने के लिए तरह तरह की कोशिशें करनेवाला आजका साम्राज्यवादी और घमण्डी ब्रिटेन नहीं होगा, बल्कि मानव-जातिकी सुख-शान्ति के लिए नम्रतापूर्वक प्रयत्न करनेवाला ब्रिटेन होगा।”

“मैं अपने हृदय की गहराई में यह महसूस करता हूं . . . कि दुनिया रक्तपातसे बिलकुल ऊब गयी है। दुनिया इस असह्य स्थितिसे बाहर निकलने का रास्ता खोज रही है। और मैं विश्वास करता हूं तथा उस विश्वास में सुख और गर्व अनुभव करता हूं कि शायद मुक्ति के प्यासे जगत को यह रास्ता दिखाने का श्रेय भारत की प्राचीन भूमि को ही मिलेगा।”



१५ जून, १९४५

वाइसराय ने भारतीय नेताओं के सामने नए प्रस्ताव रखे।

२१ जून, १९४५

शिमला कांफ्रेंस में कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना आजाद द्वारा वार्ता के पूर्ण अधिकार।

२५ जून, १९४५

लार्ड वेवल की अध्यक्षता में शिमला कांफ्रेंस आरंभ।

११ जुलाई, १९४५

शिमला कांफ्रेंस विफल, अंतरिम सरकार के सदस्यों के प्रास्ताविक नाम मुस्लिम लीग द्वारा न मानने से।

१८-१९ मई, १९४६

ब्रिटिश केबिनेट प्रतिनिधियों से मुलाकात।

२४ अगस्त, १९४६

जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में नई अंतरिम सरकार ने काम संभाला।

सितम्बर, १९४६

भारत के विभिन्न भागों में सांप्रदायिक तनाव।

“पद-ग्रहणसे यदि पदका सदुपयोग किया जाय तो कांग्रेस की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और यदि उसका दुरुपयोग होगा तो वह अपनी पुरानी प्रतिष्ठा भी खो देगी। यदि दूसरे परिणामसे बचना हो तो मंत्रियों और विधान-सभा के सदस्यों को अपने वैयक्तिक और सार्वजनिक आचरणकी जांच करते रहना होगा। उन्हें, जैसा अंग्रेजी लोकोक्ति में कहा जाता है, सीजरकी पत्नी की तरह अपने प्रत्येक व्यवहार में सन्देहसे परे होना चाहिये। वे अपने पद का उपयोग अपने या अपने रिश्तेदारों अथवा मित्रों के लाभके लिए नहीं कर सकते। अगर रिश्तेदारों या मित्रों की नियुक्ति किसी पद पर होती है, तो उसका कारण यही होना चाहिये कि उस पदके तमाम उम्मीदवारों में वे सबसे ज्यादा योग्य हैं और बाजार में उनका मूल्य उस सरकारी पदसे उन्हें जो कुछ मिलेगा उससे कहीं ज्यादा है। मंत्रियों और कांग्रेस के टिकट पर चुने गये विधान-सभा के सदस्यों को अपने कर्तव्य के पालन में निर्भय होना चाहिये। उन्हें हमेशा ही अपना स्थान या पद खोनेके लिए तैयार रहना चाहिये। विधान-सभाओं की सदस्यता या उसके आधार पर मिलनेवाले पदका एकमात्र मूल्य यही है कि वह सम्बन्धित व्यक्तियों को कांग्रेस की प्रतिष्ठा और ताकत बढ़ाने की योग्यता प्रदान करता है; इससे अधिक मूल्य उसका नहीं है। और चूंकि ये दोनों चीजें पूरी तरह वैयक्तिक और सार्वजनिक नीतिमत्ता पर निर्भर हैं, इसलिए सम्बन्धित व्यक्तियों की प्रत्येक नैतिक त्रुटिसे कांग्रेस को हानि होगी।”



“राष्ट्रीय सरकार क्या नीति अख्तियार करेगी सो मैं नहीं कह सकता। संभव है कि अपनी प्रबल इच्छा के रहते हुए भी मैं तब तक जीवित न रहूं। लेकिन अगर उस वक्त तक मैं जिन्दा रहा, तो अपनी अहिंसक नीति को यथासंभव संपूर्णता के साथ अमल में लाने की सलाह दूंगा। विश्व की शांति और नयी विश्व-व्यवस्था की स्थापना में यही हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा हिस्सा भी होगा। मुझे आशा तो यह है कि चूंकि हिन्दुस्तान में इतनी लड़ाकू जातियां हैं और चूंकि स्वतंत्र हिन्दुस्तान की सरकार के निर्णय में उन सबका हिस्सा होगा, इसलिए हमारी राष्ट्रीय नीति का झुकाव मौजूद सैन्यवाद से भिन्न किसी अन्य प्रकार के सैन्यवाद की तरफ होगा। मैं यह उम्मीद तो जरूर रखूंगा कि एक राजनीतिक शस्त्र की हैसियत से अहिंसा की व्यवहारिक उपयोगिता का हमारा पिछला सारा प्रयोग बिल्कुल विफल नहीं जायगा और सच्चे अहिंसावादियों का एक मजबूत दल हिन्दुस्तान में पैदा हो जायगा।”



१ अप्रैल, १९४६

दिल्ली वापसी और वाल्मिकी मंदिर में निवास। ब्रिटिश केबिनेट मिशन से बातचीत।

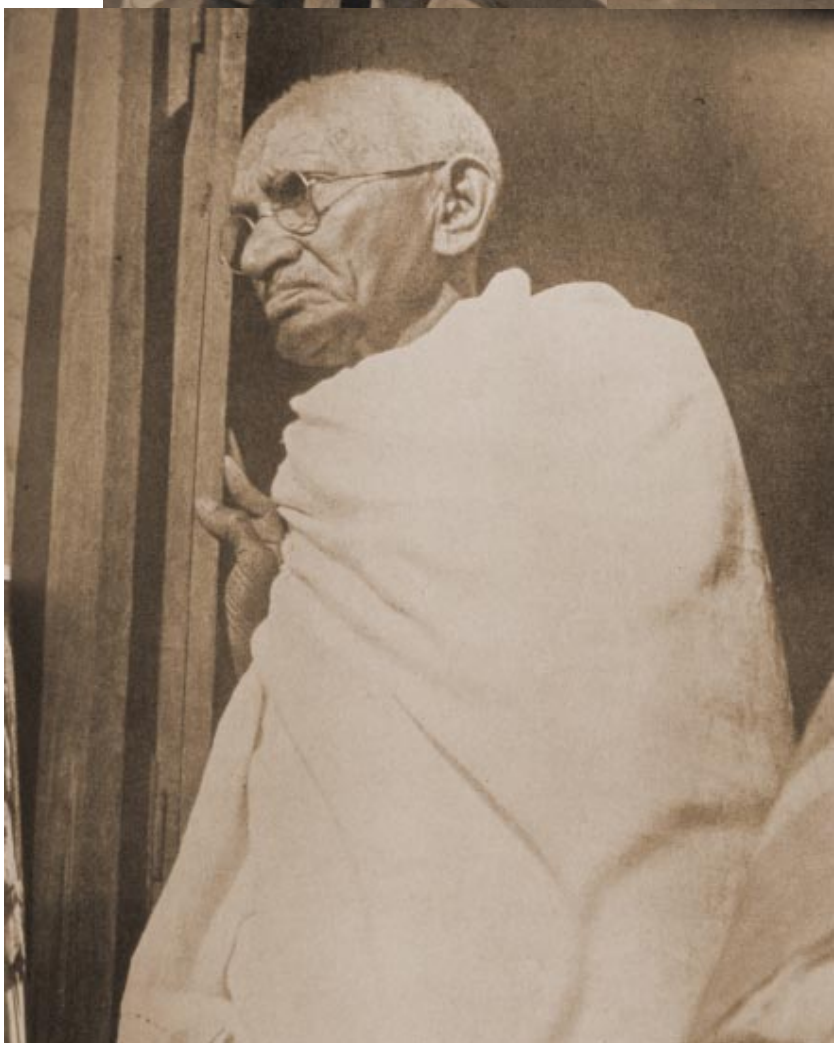
मई, १९४६

वाइसराय द्वारा कांग्रेस, मुस्लिम लीग और अन्य अल्पसंख्यक समुदाय के १४ सदस्यों को अंतरिम सरकार में शरीक होने का आमंत्रण।

अगस्त, १९४६

सेवाग्राम में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक।





“वास्तव में मेरा जीवन तो इस बात को सिद्ध करने के लिए अर्पित हुआ है कि हिन्दू-मुसलमान के बीच की सहकारिता, हिंद की मुक्ति के लिए अनिवार्य शर्त है।”



अक्टूबर, १९४६

नोआखाली और पश्चिम बंगाल के अन्य जिलों में अमानवीय नृशंसता। बिहार में साम्प्रदायिक दंगे।

६ नवम्बर, १९४६

नोआखाली का दौरा शुरू।

५ जनवरी, १९४७

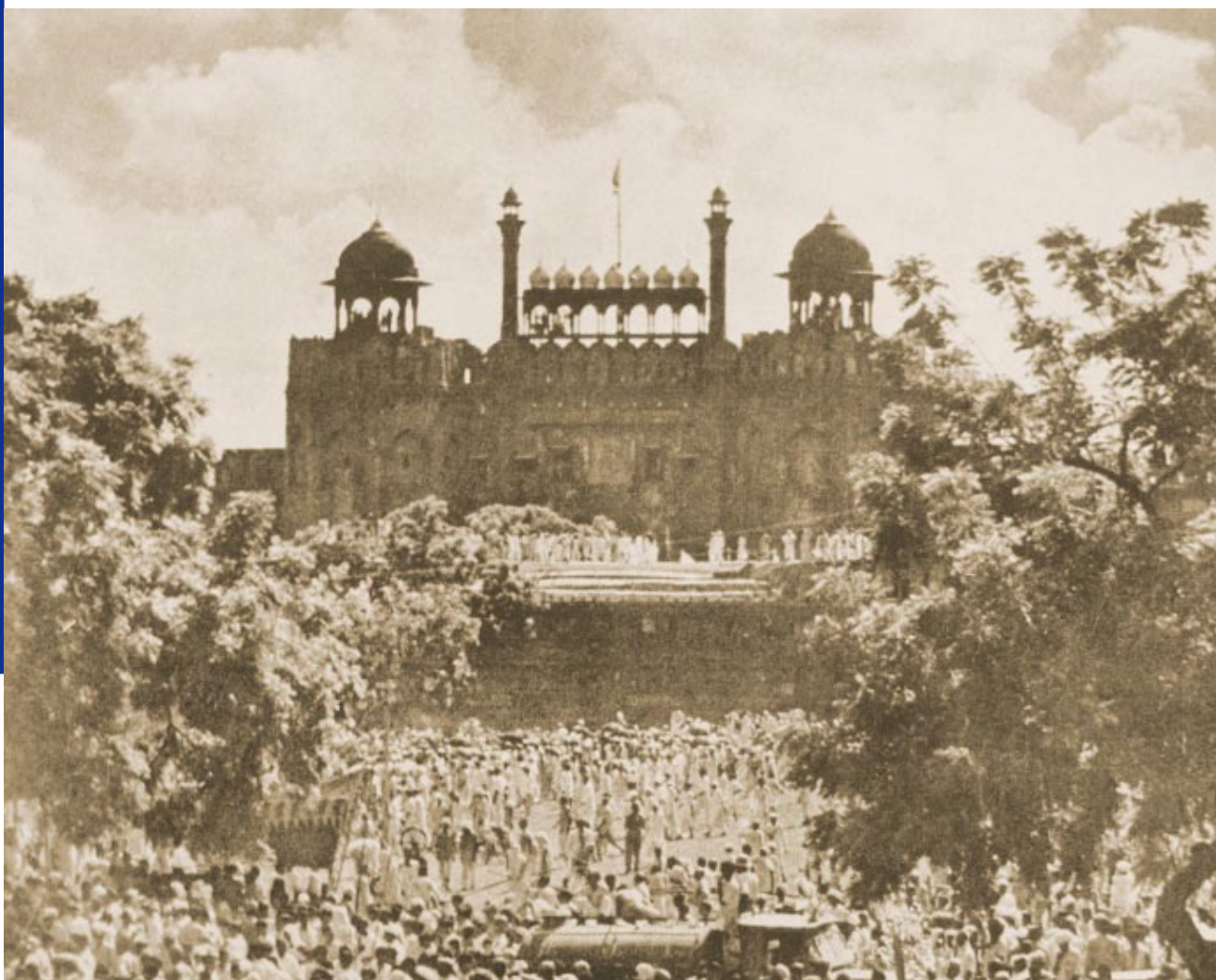
नोआखाली की पदयात्रा।

फरवरी-मार्च, १९४७

बिहार दौरे में दंगे फिर शुरू।

१३ जून, १९४७

भारत विभाजन की घोषणा।



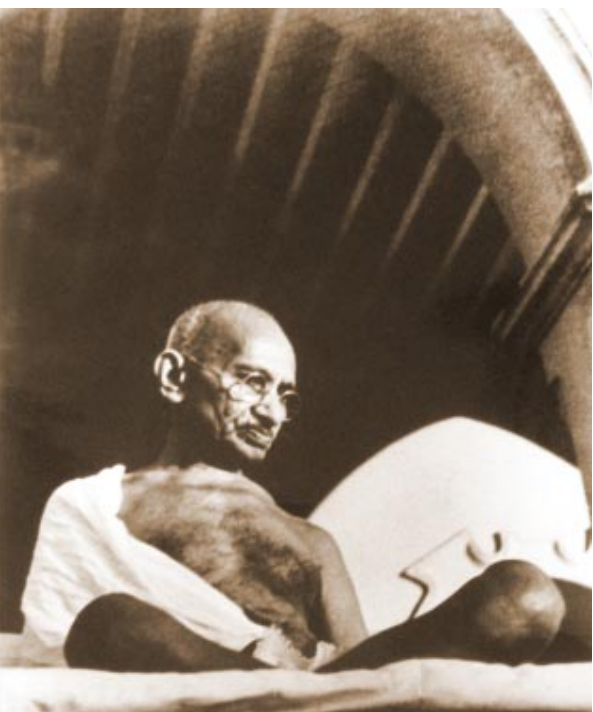
११ अगस्त, १९४७

कलकत्ता के दंगा ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा।

१५ अगस्त, १९४७

भारत स्वतंत्र। कलकत्ता में गांधीजी ने देश के दो टुकड़े हो जाने पर १३ घंटे का उपवास रखा।

“यदि मैं अपने देश के लिए आजादी की मांग करता हूं, तो आप विश्वास कीजिये कि मैं आजादी इसलिए नहीं चाहता कि मेरा बड़ा देश, जिस की आबादी सम्पूर्ण मानव-जाति का पांचवां हिस्सा है, दुनिया की किसी भी दूसरी जाति का, या किसी भी व्यक्ति का शोषण करे। आप विश्वास कीजिये कि मैं अपनी शक्तिभर अपने देश को ऐसा अनर्थ नहीं करने दूंगा। यदि मैं अपने देश के लिए आजादी चाहता हूं, तो मुझे यह मानना ही चाहिये कि प्रत्येक दूसरी सबल या निर्बल जाति को भी उस आजादी का वैसा ही अधिकार है। यदि मैं ऐसा नहीं मानता हूं और ऐसी इच्छा नहीं करता हूं, तो उसका यह अर्थ है कि मैं उस आजादी का पात्र नहीं हूं।”



“मेरी इच्छा के विरुद्ध देश का बंटवारा हुआ है। उससे मुझे बड़ा आघात लगा है। लेकिन जिस तरीके से देश का बंटवारा हुआ, उससे मुझे अधिक आघात लगा है। मैंने आज की आग को बुझाने के प्रयत्न में ‘करेंगे या मरेंगे’ की प्रतिज्ञा ली है। जिस प्रकार मैं अपने देशवासियों से प्रेम करता हूँ, उसी प्रकार मैं सारी मानव-जाति से प्रेम करता हूँ, क्योंकि भगवान हर मानव के हृदय में बसता है और मैं मानव-जाति की सेवा के जरिये ही जीवन का उच्चतम ध्येय – मोक्ष – सिद्ध करना चाहता हूँ। यह सच है कि हमने जिस अहिंसा का आचरण किया, वह कमजोरों की अहिंसा थी – यानी वह अहिंसा थी ही नहीं। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि जो अहिंसा मैंने देशवासियों के सामने रखी, वह कायरों की अहिंसा नहीं थी। और, अहिंसा का शस्त्र मैंने उनके सामने इसलिए नहीं रखा कि वे कमजोर थे, निहत्थे थे या फौजी तालीम पाये हुए नहीं थे, बल्कि इसलिए रखा कि इतिहास के अपने अध्ययनने मुझे यह सिखाया है कि उदात्त से उदात्त ध्येय के लिए उपयोग में लायी गयी घृणा और हिंसा केवल घृणा और हिंसा को ही जन्म देती है और शांति की स्थापना करने के बजाय उसे खतम कर देती है।”



१ सितम्बर, १९४७

दंगों की व्यथा न सह पाने से कलकत्ता में आमरण उपवास।

४ सितम्बर, १९४७

दंगाई अपने नेताओं के साथ आए, क्षमा मांगी और अपने हथियार गांधीजी को देकर, उनसे उपवास समाप्त करने की विनती की। रात ९ बजे उपवास तोड़ा।

सितम्बर, १९४७

दिल्ली में बिड़ला भवन में निवास। विस्थापितों के कैम्प का दौरा।

नवम्बर-दिसम्बर, १९४७

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री लियाकत अली खान, लार्ड माउंटबेटन, शेख अब्दुल्ला, बर्मा के प्रधान मंत्री थाकिन नू आदि से मुलाकातें।





१३ जनवरी, १९४८

दिल्ली में सांप्रदायिक दंगों के कारण अनिश्चितकालीन उपवास।

१८ जनवरी, १९४८

सभी समुदायों द्वारा वचन देने पर उपवास तोड़ा।

२० जनवरी, १९४८

गांधीजी की प्रार्थना सभा में बम विस्फोट।

२७ जनवरी, १९४८

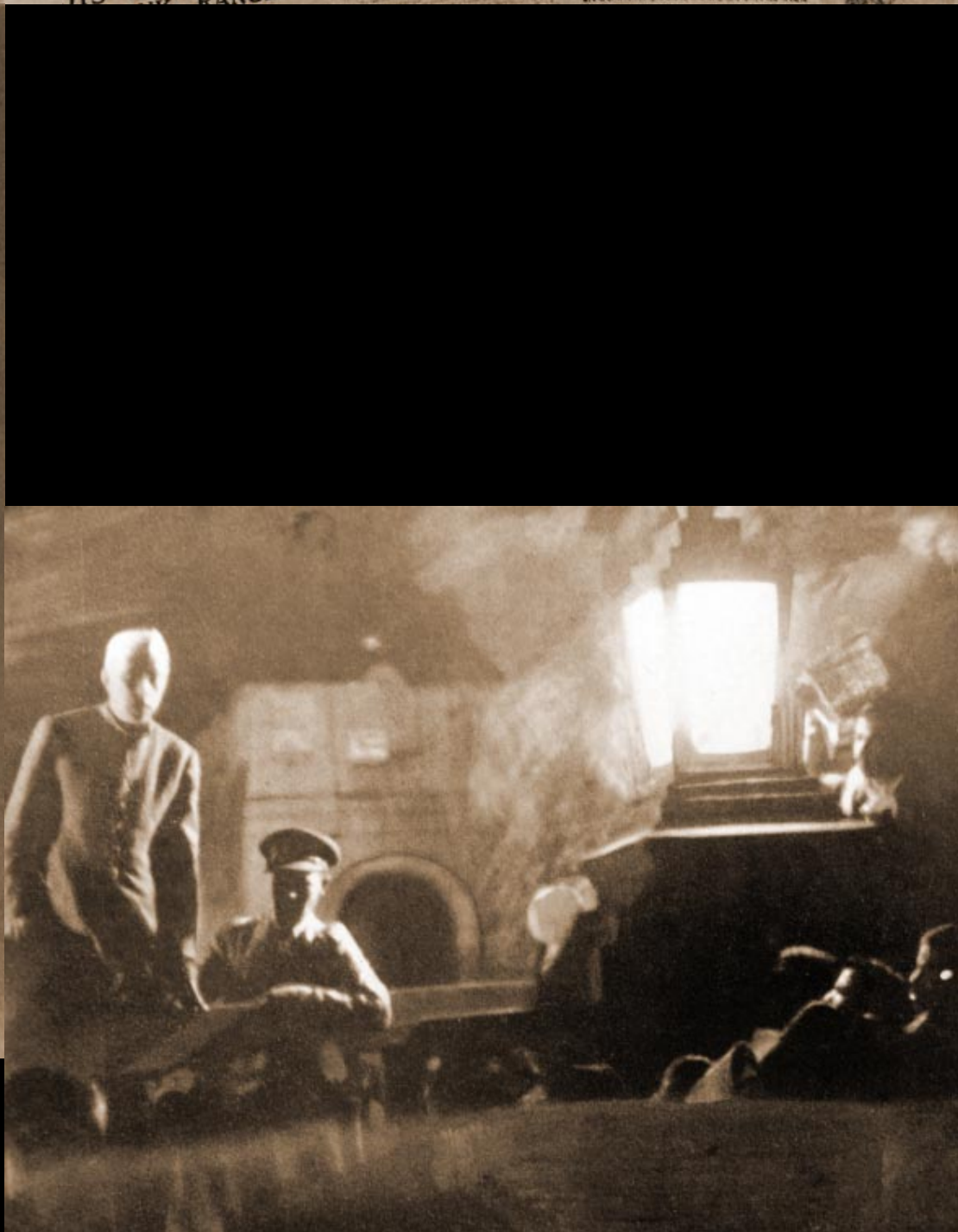
कांग्रेस को सलाह कि उसने अपना राजनैतिक अस्तित्व खतम करके पूरा समय लोक सेवा में लगाना चाहिए।

३० जनवरी, १९४८

बिड़ला भवन प्रार्थना स्थल पर शाम की प्रार्थना

“मैं संसार के सामने यह जाहिर करना चाहता हूँ – भले इस के खिलाफ कुछ भी कहा जाय और भले ही पश्चिम के अनेक लोगों का आदर और विश्वास मैं खो दूँ – कि मुझे अपने अन्तर की आवाज को, चाहें तो आप उसे अन्तरात्मा कह लीजिये, या चाहें तो मेरे मूल आन्तरिक स्वभाव की प्रेरणा कह लीजिये, दबाना नहीं चाहिये। मेरे भीतर ऐसा कुछ है जो मुझे अपनी वेदना प्रकट करने की प्रेरणा दे रहा है। मेरे भीतर का वह तत्त्व, जो मुझे कभी धोखा नहीं देता, अब मुझ से कहता है – ‘तुम्हें सारे संसार के खिलाफ खड़ा रहना होगा, भले तुम्हें अकेले ही क्यों न खड़ा रहना पड़े। दुनिया क्रोधभरी आंखों से तुम्हारी ओर देखे, तो भी तुम्हें उसकी परवाह न करके हिम्मत से उसके सामने देखना होगा। तुम्हारे हृदय में बसनेवाली उस सूक्ष्म शक्ति में विश्वास रखो जो कहती है – मित्रोंको, पत्नीको, सभीको छोड़ दो, लेकिन उस ध्येय पर अटल रहो, जिसके लिए तुम आज तक जिये हो और जिसके लिए तुम्हें मरना चाहिये।”



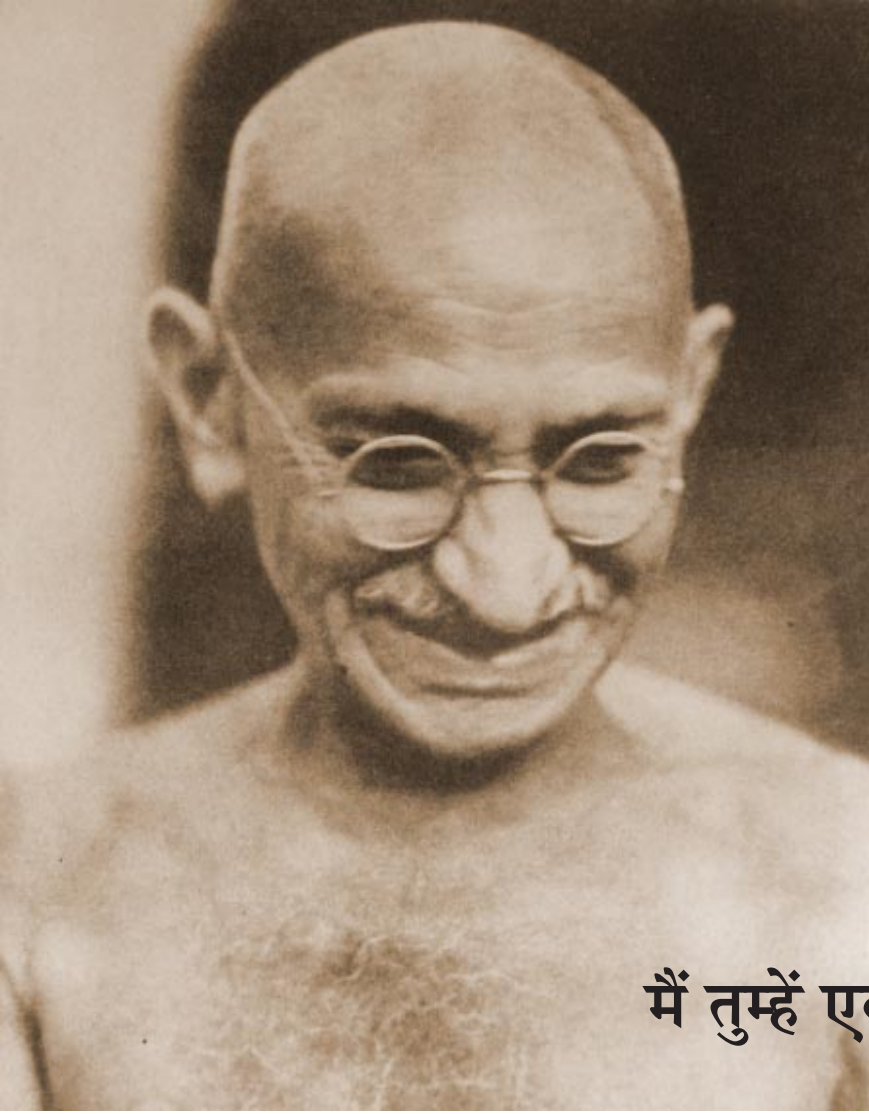


बिड़ला भवन प्रार्थना स्थल पर शाम की प्रार्थना के लिए जाते हुए,
नाथूराम विनायक गोडसे द्वारा गोली मार कर हत्या।



“यदि मैं जीर्ण बीमारी के कारण मरूँ, या एक फुंसी या घाव के कारण मेरी मृत्यु हो तो जनता के क्रोध का खतरा उठाकर भी दुनिया के सामने प्रकट करना तुम्हारा फर्ज है कि गांधी जैसा दावा करता था वैसा खुदा का बंदा नहीं था। तुम ऐसा करोगे तभी मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी। यह भी ध्यान में रखना, अगर कोई मुझे गोली मारकर मेरे जीवन का अंत करने का प्रयास करे – जैसा अभी हाल में किसी ने बम द्वारा करना चाहा था – और मैं उसकी गोली दुखपूर्ण चीत्कार के बिना सहन कर लूँ और राम का नाम रटते-रटते प्राण त्याग करूँ तो ही मेरा दावा सच होगा।”





मैं तुम्हें एक ताबीज देता हूँ। जब भी तुम दुविधा में हो, या जब अपना स्वार्थ तुम पर हावी हो जाए, तो इसका प्रयोग करो। उस सबसे गरीब और दुर्बल व्यक्ति का चेहरा याद करो जिसे तुमने कभी देखा हो, और अपने आप से पूछो - जो कदम मैं उठाने जा रहा हूँ वह क्या उस गरीब के कोई काम आएगा? क्या उसे इस कदम से कोई लाभ होगा? क्या इससे उसे अपने जीवन और अपनी नियति पर कोई काबू फिर मिलेगा? दूसरे शब्दों में, क्या यह कदम लाखों भूखों और आध्यात्मिक दरिद्रों को स्वराज देगा?

तब तुम पाओगे कि तुम्हारी सारी शंकाएं और स्वार्थ पिघल कर खत्म हो गए हैं।



मुझे दुनिया को कुछ भी नया नहीं सिखाना है।
सत्य और अहिंसा अनादिकाल से चले आए हैं।